1895

12



नित्यप्रार्थना

दो भाग

प्रत्येक स्त्री पुरुष, अधिकतर विद्यार्थी बालकों के अर्थ

पूज्यपाद श्री स्वामी पण्डित श्रद्धाराम जी विरचित

लुध्याना गवर्मेण्ट हाईस्कूल के मुख्य संस्कृताध्यापक

कांगड़ा निवासी पंडित सिंहपालशर्म्माद्वारा अनुवादित

शिष्य तुलसीदेव द्वारा प्रकाशित

मित्रविलास यन्त्रालय लाहौर में मुद्रित

नीचे लिखे पते पर मिलेगी

पं० श्रद्धाराम जी की विधवा

पं० महतावकौर हरिज्ञान मन्दिर

फुल्लोर—ज़िला जालन्धर

मार्गशिर } दिसंबर

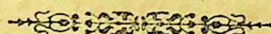
सं० १९५२ } सं० १८९५

प्रथम आवृत्ति १०००



ओम्

अथ नित्य प्रार्थनारम्भः



॥ शिखरणी छन्द ॥

ओंत्वदीयान्नाम्नोऽत्रा अधमकुलजाताश्च बहवः
विमुक्ताःपापेभ्यः पुनरपिविपद्भ्यः कलिमलात् ।
मनोयेवाश्वन्ते यदुपदशदोषाः प्रतिदिनम्
स्वदासँभ्रांतेभ्यो झटितिकृपया मोचयविभो ॥ १ ॥

हे परमेश्वर ! तेरे नामसे नीचकुल में भी उत्पन्न होकर कलियुग के पापों और बड़ीविपदों से बहुत लोग छूट गये हैं मेरे मन को जो दश इन्द्रिय प्रति दिन पीड़ा दे रहे हैं अपनी शरण में आए हुए मुझ को तूं उन से छुड़ा दे ॥ १ ॥

गृहान्सर्वांस्त्यक्त्वा जगतिपतितोहं तवगृहे
गताब्रह्माद्यावै गिरिधरयतो वाञ्छितपदं ।
नकांचे न्यत्किञ्चिद्हृदिमम चौर्य्यं वसतियत्
समूलंछिन्धि तत्परमविषरूपं हरहरे ॥ २ ॥

हे परमेश्वर ! हे दुःखहरण ! मैं संसार में सारे घरों को छोड़ कर तेरे ही घरमें आपड़ा हूं, जिस घर में आकर ब्रह्मादिकों की भी इच्छा पूरीहुई । मैं और कुछ नहीं चाहता, मेरेहृदय में जो छिपा कर पाप करने का स्वभाव है उस विषरूपी वृक्ष को शीघ्र जड़ों से काट दे ॥ २ ॥

तवद्वारिब्रह्मन् धनसुतकलत्रं हिवहवः
पशून्यानान्भृत्यान् दुरितहरकांक्षंति चपरे ।
अहंत्वेकंकांक्षे तवगृहगतः केवलमितः
स्वभावंहिंसायां ममहरनमस्ते प्रतिदिनम् ॥ ३ ॥

हे परमेश्वर ! तेरे तांई सदा नमस्कार हो, तेरेघर पुत्र, स्त्री पशु, यान और भृत्य बहुत हैं, इन को दूसरे चाहते होंगे, मैं तेरे घर से यही एक बात चाहता हूं, कि जो मेरा दूसरों को पीड़ा देने का स्वभाव है, उस को तूं दूर कर ॥ ३ ॥

सहन्संसारेस्मिन् प्रतिदिनमनन्तान् परिभवान्
भ्रमाम्यस्माच्चत्ते चरणविमुखो येनचधृतः ।
अहंनौमि तुभ्यं दमयसमविष्णो दृढ़रिपुं
व्यवायन्तं दारा ननुपरयथा श्वाच्छलमलं ॥ ४ ॥

हे सर्वव्यापक ! मैं तेरे तांई नमस्कार करता हूं, मैं जिस से इस संसार में दिन २ अनेक निरादरों को सहारता हूं और जिस से पकड़ा हुआ तेरे चरणों को भूल अति निन्दित होकर स्वान की तरह भटकता फिरता हुं, उस न तृप्त होने वाले, अति निन्दित, दृढ़ शत्रु, स्त्री सङ्ग के लोभी, काम को तूं नाश कर॥४॥

स्वनामाख्यानार्थं परगुण विकाशार्थमथवा
त्वयाजिव्हादत्ता प्रवचनसमर्था ममसुख ।
परित्यज्योभौसा वदतिजगतां निन्दितमहो
नमस्तेतस्यास्त्वं हरतितरां नन्दजविषम् ॥ ५ ॥

हे कृष्ण ! तुझे नमस्कार हो, तू ने अपने नाम के जपने और दूसरों के गुणों को प्रकट करने के लिए, बोलने की सामर्थ्य वाली, मेरे सुख मे जिह्वा दी है, वह दोनों को छोड़ कर जगत की निन्दा करती है, तूं इस जिह्वा के निन्दा रूपी विष को दूर कर ॥ ५ ॥

शरीरस्थांगेभ्यो सम लघुमहद्भ्यो व्रजविधो
मुखंपूतं तस्मिन् प्रियवचनयुक्ता यदिभवेत् ।
पवित्रेयंजिह्वा बहुमलयुता तेनचविना
अतोवाच्यंतस्या गिरिधरसमुत्साट यतराम् ॥ ६ ॥

हे कृष्ण ! मेरे छोटे बड़े शरीर के सब अङ्गों से मुख पवित्र है, उस में प्यारे वचन कहने से ही यह जिह्वा पवित्र हो सकती है नहीं तो इस का मैल नहीं जासक्ता इस लिए तू उस के अवाच्य रूपी मैल को दूर कर ॥ ६ ॥

दुराख्यातिर्लोके भवतिपरलोकेच कुगतिः
मनुष्याणांयस्मा दिखलविपदां कारणमिदम् ।
यतःस्वस्मिन्नित्यं भयमथचतापं परगणे
तदंहोरूपंमेऽनृतमपनय त्वंव्रजसखे ॥ ७ ॥

हे कृष्ण ! जिस से संसार में अपयश और परलोक में कु· गति मनुष्यों को होती है, और जो सारी विपदों की जड़ है, जिस से अपने आप को डर और दूसरों को दुःख होता है, ऐसे मेरे पाप रूपी झूठ को तूं दूर कर ॥ ७ ॥

हता:सर्वेदैत्या: विबुधपरिपचा दृढतरा:
कराल्तेराजानो बहुबलयुता श्चाप्यतिमृता: ।
विनाशंप्राप्तानि प्रथमबहुदुर्गा ण्यपिसतां
मन:क्रोधंकृष्ण प्रणामतिमुहुर्मा रयजन: ॥ ८ ॥

हे कृष्ण ! तेरे तांई मैं तेरा जन्तु वार २ प्रणाम करता हूं, तेरे हाथ से देवतों के बड़े २ बलवान् शत्रु, सारे दैत्य और बड़े बड़े अहङ्कारी राजा मारे गए हैं, और कई एक पूर्व भक्तों को आपदें दूर हुईं, उसी हाथ से तूं मेरे क्रोध बलवान् शत्रु को मार ॥ ८ ॥

जगद्दुखध्वंसं प्रतिसुविधरूपाय भजतां
महापापाब्धिस्थान् प्रतिशुभगपोतान् पुरुषान् ।
विपत्सुग्रस्तानां गजइवपरित्राण वलिने
नमस्तेश्रीकृष्ण प्रहरममहीर्षां हृदिगताम् ॥ ९ ॥

हे कृष्ण भक्तों के और जगत् के दु:ख दूर करने के लिये तू ने अनेक रूप धारे हैं, और बड़े पाप के भरे समुद्र में डूबे हुओं को बाहर निकालने के लिए तू सुन्दर जहाज़ है, और हस्ती की तरह विपद में डूबों हुओं को निकालने के लिए तू ही समर्थ है, ऐसे तेरे तांई नमस्कार हो, तू मेरे हृदय में रहने वाली ईर्षा को दूर कर ॥ ९ ॥

नकश्चित्संसारे श्रुतिपथगतोवा नयनगः
जनोयस्तेधाम्नो वरदखलुरिक्तः परिगतः ।
तवगारंश्रीमन्न हमपिसमीचे हरपरं
नभोभूयोमेस्या त्तनुधनगृहादि ष्वभिमतिः ॥१०॥

हे परमेश्वर ! ऐसा कोई मनुष्य संसार में न सुना न देखा, जो तेरे घर से कहीं और स्थान में गया हो, हे सामर्थ्यवान् ! मैं यही चाहता हूं कि तेरे घर में पहुंचूं, और फिर मेरी वासना, शरीर, धन और स्त्री, पुत्रादि में कभी न हो ॥ १० ॥

गजत्रासश्छिन्नो यच्चपरमभिन्नो मुरमदः
त्वयाचार्त्तिर्ध्वस्ता द्रुपदतनयायाः करुणया ।
यथाकृष्णाक्रान्तं वृजिनममराणां हरतथा
छलंयन्नित्यं मे वसतिमनसि प्रार्थनमतः ॥ ११ ॥

॥ इति श्रद्धाराम कृता प्रार्थना समाप्ता ॥

हे कृष्ण ! जैसे तूं ने दया से गज का भय हरा, और मुर नाम दैत्य का बड़ा मद तोड़ा, और द्रौपदी की पीड़ा नाश की और देवतोंकी पीड़ा को भी नाश किया, मेरी नित्य यहप्रार्थना है कि इसी प्रकार तू मेरे मनमें जो छल है उसको दूरकर॥११॥ यह श्रद्धाराम की की हुई नित्यप्रार्थना की सिंहपाल की कीहुई भाषा टीका समाप्त हुई ॥

॥ श्रीकृष्णायनमः ॥

नकिन्तेधाम्नीश ह्यखिलविभवाना मसिपतिः
स्मरन्तित्वांयेता न्स्वयमपिसमा गच्छतिसुखं ।
यदृच्छन्त्यर्थान्स्वान् सुखदपरतोहं नचतथा
त्वमेकोदातामे प्रकुरुपरितोषं हृदिगतम् ॥ १ ॥

हे ईश तेरे घर में क्या नहीं है ? तू सारी सम्पदों का स्वामी है जो तुझ को स्मरण करते हैं उन के पास अपने आप सुख आ जाता है, और लोग जिस प्रकार तुझ से सुख को चाहते हैं उस प्रकार मैं नहीं, मैं तो तुझ एक दाता से यह चाहता हूं कि तू मेरे हृदय को सन्तोष का दान दे ॥ १ ॥

अहोसर्वेजीवा भुविवरसमास्ते ष्वपिजनाः
धिगस्त्वात्मौपम्यं यदुहनविपश्यन्ति ह्यखलाः ।
प्रियांस्तान् ज्ञात्वाहं तवगृहतदृच्छा म्यनुदिनं
विभोहत्वाहिंसां ममभरदयालो मयिदयाम् ॥२॥

हे परमेश्वर ! इस संसार में तुझे सारे जीव समान हैं, जो खोटे मनुष्य उन को अपने बराबर नहीं देखते हैं, उन को धिक्कार है । हे दयालो ! हे सामर्थ्य मैं उन सबको प्यारा जान कर तेरे घर से यही चाहता हूं कि मेरे पर दया कर, मुझ में जो दूसरों को दुःख देने का अवगुण है उस को तूं दूर कर ॥ २ ॥

त्वयामानुष्यंमे परमकृपया दुर्लभतरं
प्रदत्तंचाङ्गानां स्थितिमपिसमीचे तवकृतां ।
पुनस्तेष्वारोग्यं वसतिह्रिदया तस्तवविभो
इदानींकांचे हं हृदिकुरुयतित्वं हरमदम् ॥ ३ ॥

हे परमेश्वर ! तूने बड़ी दया से मुझे दुर्लभ मनुष्य देह दिया, उसको और उसमें तेरी ठोकर रखीहुई अङ्गों की स्थितिको, मैं देखता हूं, और फिर उनका रोग रहित होना यह भी तेरी ही दया है, अब मैं यह प्रार्थना करता हूं कि मेरे मद को दूर कर, मुझे यती बना ॥ ३ ॥

मुखेजिव्हेयंया स्तुतिकरणशक्ता सदसतां
पुनस्तेनाम्नांवा चरणभक्तानां कीर्त्तनपरा ।
नचेत्स्यान्मन्येतां मुखगतमिदं चर्म्मशकलं
अतोनामाकांचे नहियदिसमुत्कृन्तयविभो ॥ ४ ॥

हे विभो ! यह मेरे मुख में जिह्वा अच्छे बुरों की स्तुति करनेमें लगी रहतीहै, यदि यह तेरे नाम और तेरे भक्तों के गुणों को न गावे, तो मैं इस को चमड़े का टुकड़ा मानता हूं; इस लिए तूं इस जिह्वा को अपना नाम दे; नहीं तो जड़ों के सहित उखाड़ दे ॥ ४ ॥

नसर्पात्सिंहाद्वा प्रभवतिनृणां पीडनमहो
यथावाच्यैरुक्तै र्नहिचधनुषो दारुणविषात् ।
अतोजिह्वातस्या न्यपनयनिधे हिस्वभजनं
नमस्तेहंयस्मादिह वरमुखीस्या मथपरे ॥ ५ ॥

हे परमेश्वर ! इस संसार में मनुष्यों को ऐसी पीड़ा सर्प, सिंह, तीर, और बड़े तेज विष से भी नहीं होती जैसी कि कौड़ा बोलने से होती है, इस लिए तू इस जिह्वा के कौड़ेपन को दूर कर, और अपना भजन दे जिस से मेरा और दूसरों का भी कल्याण हो, तेरे ताईं नमस्कार हो ॥ ५ ॥

धृतंसत्येनेदं सुरनरभुजङ्गै रपिभृतं
विधातस्मिन् जीवन्ति जगदथतेनैव हिचिरं ।
ऋतेतस्माद्धिक्तान्य इहपरितिष्ठन्ति चजनाः
अतोजिह्वायांमे वितनुपरसत्यं सुखकरं ॥ ६ ॥

हे परमात्मन् ! देवता, मनुष्य, पशु, पक्षियों से भरा हुआ यह संसार सत्य ही से थमा हुआ चिर काल ठहरता है, औरसब जीवों का निर्वाह सत्य ही से होता है, उस सत्य के बिना जो मनुष्य इस संसार में जीते हैं उन को धिक्कार है इस लिए मेरी जिह्वा में तू सत्य को विस्तार कर ॥ ६ ॥

सुखंपूर्णंयस्याः प्रभवतितचान्येन विधिना
नृणांदृष्ट्वातिष्टां रिपुषुबिजयंस्या दृथयया ।
सुतेमातेवाङ्गा विदधतिसुरचां परमुदा
चमांतांमेस्वामिन् मयितनुनमस्ते प्रतिदिनम्॥७॥

हे परमेश्वर ! मैं तेरे तांई बार२ नमस्कार करके, यह प्रार्थना करता हूं कि सब यत्नोंको छोड़ कर पूर्ण सुख, और शत्रुओं की हार जिस चमासे होती है, और जो चमा सुखपूर्वक माता जैसे बेटों की रचा करती है, उस मेरी चमा को तूं नित्य वृद्धि कर ॥ ७ ॥

त्वयायेसंसारे धनगुणसुता गारसहिताः
समानामत्त्वोच्चाः सुखदकृपया वर्द्धितजनाः ।
कृतास्तान्वोच्याहो ममनसियेर्षा भवतितां
नहित्वंसामान्यं सकलमनुजेषु प्रतनुमे ॥ ८ ॥

हे सुख के दाता ! तुझ से जो संसार में कृपा से बढ़ाए हुए मेरे बराबर या मुझ से बड़े धन विद्या बेटे महलों वाले मनुष्य हैं उन को देख कर जो मेरे मन में ईर्षा है, उस को तूं दूर कर, और सारे जीवों को एक जैसा देखने की दृष्टि दे ॥ ८ ॥

अशुद्धोयंदेहः पुनरपिधनंन स्थिरमिदम्
कलत्रंमित्रंवा कुलमथसुरूपं परतथः ।
गुणाःसर्वेश्लाघ्या स्तवभजनरिक्ता यतइमे
अतोमिथ्यामानं जहिघटयनैर्मोक्ष पदवीम् ॥ ६ ॥

हे ब्रह्मन् मैं जानता हूं कि यह देह अशुद्ध है, और धन, पुत्र, स्त्री, मित्र, कुल, सुंदरता, सब नष्ट होने वाले हैं, और सब गुण तेरे भजन बिन निकम्मे हैं, इस लिए तूं मेरे झूठे अहंकार को दूर कर, और मुक्ति को दे ॥ ६ ॥

यथामेचान्येषां प्रभवतितथार्थे ष्वपिहितं
छलात्तेभ्यस्तान्योऽपहरतिसचास्ति ह्यधमराट् ।
अतस्तन्मेभूम जहिपरविषं देहिचसदा
नमस्तेसारल्यं सुखमिहपरत्वे स्जतियत् ॥ १० ॥

हे ब्रह्म ! धन जैसे मुझे प्यारे हैं वैसे ही दूसरों को भी जो छल से दूसरों के धन को लेता है, वह नीचों का राजा है, इस लिए तूं मेरे विष रूपी छल को दूर कर और जिस से लोक पर-लोक में सुख होता है उस शुद्ध अंदर बाहर से एक जैसा भाव को दे ॥ १० ॥

पठन्तोनित्यं यद्भवभययुताश्चा प्यघयुताः
विमुच्यन्तेलोकाः पुनरपिविशन्त्या त्मनिपदं ।
अहंश्रद्धारामः सुगमतरमात्मार्थ मथवा
परार्थं श्रीविष्णो र्व्यरचितवान्प्रार्थनमिदम्॥ ११॥

॥ इति श्रद्धाराम कृता द्वितीया प्रार्थना समाप्ता ॥

मैं श्रद्धाराम ! बहुत सुगम, अपने और दूसरों के लिए इस श्री परमेश्वर की प्रार्थना को रचता भया जिस को नित्य पढ़ते हुए संसार में भयभीत पापी लोग भी पाप से छूट जाते हैं, और फिर अपने ब्रह्म में मिल जाते हैं ॥ ११ ॥

श्रद्धाराम की की हुई दूसरी प्रार्थना की सिंहपाल की हुई भाषा टीका समाप्त हुई ॥

विज्ञापन

स्वामी दयानन्द सरस्वती की महिमा। इस मे आर्यामत की साधु शब्दों मे छानवीन कीगई है। सुहृद् आर्या लोग अवश्य पढ़ें मूल्य ≡)

मुक्ति और पुनरावृत्ति। दयानन्द के सिद्धांत का खण्डन, पण्डित जगन्नाथ वकील हुश्यारपुर कृत, जिसकी भूमिका पण्डित गोपीनाथ जी ने लिखी है। मूल्य ≡)

धर्म्मकसौटी। श्री पण्डित श्रद्धाराम जी फिल्लौरी प्रणीत। इस मे मुन्शी कन्हैयालाल अलखधारी के सब आक्षेपों का नम्बरवार बड़ी अच्छी तरह उत्तर दिया गया है। मूल्य =)

धर्म्मरक्षा। श्री पण्डित श्रद्धारामजी फिल्लौरी रचित। इस में उन सब आक्षेपों के यथा योग्य उत्तर दिए गए हैं जो विविध मतावलम्बी सनातन धर्म्म पर करते हैं। (उर्दू में) मूल्य ॥)

रमलकामधेनु। संस्कृत से हिन्दी भाषा की हुई। इस छोटे से ग्रन्थ में रमल शास्त्र की सारी विद्या भरी हुई है और भाषा ऐसी सुगम है कि इस ग्रन्थ के पढ़ने में गुरु की इच्छा नहीं। इस ग्रन्थ के समान और कोई ग्रन्थ नहीं। मूल इस अपूर्व ग्रन्थ का केवल २) रु०

भाग्यवती। स्त्रीशिक्षा की अपूर्व और प्रसिद्ध पुस्तक। श्री पण्डित श्रद्धाराम जी फुल्लौरी रचित और स्वदेशीय बालकाओं के उपकारार्थ स्वर्ग वासी पण्डित जी की विधवा द्वारा प्रकाशित। इस पुस्तक की प्रशंसा सर्कार की ओर से हुई है और अलीगढ़ की भाषा संवर्द्धनी सभा ने पारितोषिक दिया है। कीमत १। सवा रु०

मित्रविलास यन्त्रालय लाहौर से मिलेंगी॥



पुस्तक लौटाने की तिथि अन्त में अङ्कित है । इस तिथि को पुस्तक न लौटाने पर दस नये पैसे प्रति पुस्तक अतिरिक्त दिनों का अर्थदण्ड आप को लगाया जायेगा ।

५०००.११.१४।

Date	No.	Date	No.

